धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अप्रैल 2008

- ❖ देव वाणी
  - ❖ चीथड़ों का इश्क
    - ❖ पति पत्नी के सम्बन्ध का महत्त्व
      - ❖ सम्बन्धों में ही जीवन है
    - ❖ धर्म की दुकानों के चमकते धन्धे
  - ❖ जीवन प्रसंग
- ❖ शुभ संग्राम

देव वाणी

1. मनुष्य की सच्ची कमाई वही है जो विशुद्ध उच्च भावों से औरों के काम आवे। वह जितना औरों के काम आएगा, उतना ही उसके भीतर की पूंजी बढ़ेगी और वो अपनी चीज बन जाएगी वरना और कोई भी अपनी नहीं, और तो और यह शरीर भी अपना नहीं है।
2. यह जरूरी नहीं कि रोगी ही मरता है बल्कि जो रोगी न हो परन्तु लगातार खाद्य से वंचित रहे, वो भी धीरे-धीरे मर जाता है। तब आवश्यकता है कि तुम्हारे भीतर यह आकाँक्षा हो कि मेरी गति उच्च हो, मेरा विकास हो। नेचर में आध्यात्मिक रक्षा और उन्नति का यही नियम है।
3. यदि तुम्हारे लिए संभव हो तो तुम नीच स्वार्थ के जीवन से निकल कर निष्काम-सेवा, परोपकार व परहित का मार्ग ग्रहण करो, ऐसा करने से तुम्हें क्या इस संसार में और क्या किसी और दुनियां में भी पछताना नहीं पड़ेगा।
4. नीच अनुराग एक-एक जन पर अधिकार करके उसके शरीर और मस्तिष्क दोनों को इतना ज्यादा काबू में कर लेते हैं कि फिर तो उनकी पूर्ति के सिवाय किसी हित उत्पादक सच्ची सेवा करने की इच्छा भी अपने अन्दर अनुभव नहीं करता।
5. नीच सुख अनुरागी बनकर प्रत्येक मनुष्य के लिए न केवल अपनी आत्मा किन्तु अपने शरीर की गठन के सम्बन्ध में हानिकारक बनना आवश्यक है।
6. मनुष्य का मन उसकी आत्मा से कोई पृथक वस्तु नहीं, बल्कि उसका कोष है। इसलिए यह संस्कार अति मिथ्या और अति हानिकारक है कि पाप तो मन करता है और आत्मा निर्दोष रहता है। और उसे किसी पाप का फल नहीं भोगना पड़ता।
7. जो मत या साधन मनुष्य को पाप जीवन से निकलने में कोई सहायता नहीं करता उसका सत्यधर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।
8. जैसे आग में हाथ डालने से हाथ अवश्य जल जाता है और कोई कल्पित देवी देवता या ईश्वर उसके फल से किसी को बचा नहीं सकता वैसे ही जो मनुष्य जीवन की असल भलाई की तरफ से अज्ञानी रह कर विनाश के मार्ग पर जा रहे हैं, उन्हें उनके कोई कल्पित विश्वास या कोई कल्पित देवी देवता या उपास्यदेव विनाश के महादुखदायी परिणाम से नहीं बचा सकता और विनाशकारी गति से उनका उद्धार नहीं कर सकता।
9. नेचर तुम से चाहती है कि जिस-जिस विषय में कोई जन सम्मान का पात्र है तुम उस उस पहलू में उसे सम्मान दो। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो तुम जीवन के विचार से बहुत घटिया मनुष्य हो।
10. धर्म जीवन की प्राप्ति के मार्ग पर चलने का अधिकारी बनने के लिए हानि परिशोध के उच्च भाव को अपने भीतर पैदा करने की नितान्त आवश्यकता है।
11. जीवन साधन और संग्राम की वस्तु है। इसमें निराश होने की कोई बात नहीं। लगातार सच्चा साधन करने से आत्मा के भीतर से कोई नीच शक्ति नष्ट होनी चाहिए और कोई उच्च शक्ति पैदा होनी चाहिए।
12. जिस मनुष्य में जितनी श्रेष्ठ शक्तियां अधिक हैं वो उतना ही बढ़िया है। यह उसकी सबसे बढ़कर दौलत है। क्यों न तुम उसको पाओ। बाकी सब पदार्थ कपड़े जेवर रुपये आदि यहीं रह जाते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 4

अप्रैल 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

चीथड़ों का ईश्क

मनुष्य अभी अधिकतर स्थूल दुनियां में ही घूम रहा है। नेचर के सूक्ष्म रूप की दुनियां साधारणतय अभी उस पर खुली नहीं है। मनुष्य को उसका वजूद बहुत प्यारा है। अपने अस्तित्व में वह अधिकतर अपने शरीर को मुख्य समझता है। इसलिए स्थूल शरीर का ध्यान उसकी स्थूल आँखें खींचती हैं। शरीर को अति प्यारी वस्तु समझकर मनुष्य उसकी पूजा में लगा हुआ है और आगे भी अधिक से अधिक इसी ओर ही उसका झुकाव है। मनुष्य को उच्च कीमतों की यहां तक कि बहुत उच्च शिक्षा की कदर भी कम ही जागती है।

शारीरिक पूजा यह है कि मनुष्य सुखों, स्वादों पर मरता है और वही सामान, सम्बन्धी इकट्ठे करने में अपनी शक्तियां लगा रहा है। खाने पीने के सुख, विषय वासनाओं के सुख, हंसी खुशी के सुख, आराम, सहूलतों वा ऐश बहार के सुख आदि ही मनुष्य जीवन में प्रधान स्थान रखते हैं और उनकी प्राप्ति, धन, धरती, पदार्थों की प्राप्ति को ही वह कीमती समझता है।

शारीरिक पूजा में मनुष्य अपनी सजधज, सुन्दरता दिखावे के लिए बहुत ज़ोर लगाता है, बहुत समय, पैसा और अन्य ताकतें खर्च कर रहा है। मनुष्य की उक्त इच्छा पूर्ति के लिए एक नहीं अनेक प्रकार की बड़ी बड़ी इंडस्टरीज़ का अगाज़ हुआ है।

शारीरिक सज धज के लिए मेकअप के साज समानों के साथ अन्य फैशन परस्ती करना भी शामिल है।

मनुष्य अपनी पोशाक द्वारा, अपनी सजधज करके अपनी भावनाओं की तृप्ति के लिए जिस प्रकार चिन्तित और क्रियाशील रहता है, उसका पूरा-पूरा ब्यान करना कठिन है। इस मन्तव्य के लिए वह अधिक से अधिक खर्च करने के लिए भी तैयार है। होटलों, सिनेमों की तरह मनुष्य की पोशाक के उद्योग बढ़ने के लिए ही हैं।

मनुष्य के लिए खुराक के बाद वस्त्र, पोशाक ही अति अवश्यक है। वस्त्र सबसे पहले उसको ढकने के लिए, उसको सर्दी, गर्मी से बचाने के लिए अवश्यक हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, उसने समाज में रहना है, उसका लिबास साफ सुथरा होना अवश्यक है, मैला, गन्दा, फटा हुआ, पुराना और भड़कीले रंगों

वाला नहीं होना चाहिए। इन सीमाओं को पार करते ही फैशन की दुनियां आरम्भ हो जाती है। इस दुनियां की आगे कोई सीमा नहीं।

मनुष्यों, देशों, कौमों, समाजों का जो समय, जो दिल दिमाग, जो धन और जो ताकतें इस फैशन परस्ती पर खर्च होती हैं, वह बहुत दुखदाई और चिन्ताजनक हैं।

हमारे समाज में फैशन की नुमाईश खुले आम देखने को मिलती है, युवक, युवतियां इस दौड़ में बहे जा रहे हैं। सब फैशन के मतवाले दिखाई देते हैं। फिल्मी दुनियां इस महामारी को और हवा दे रही है। कई अपनी हैसीयत से बाहर पैसा लुटाने, करजाई होने वा मांगकर परिधान पाने के लिए भी तैयार रहते हैं। विवाह, शादियों और अन्य समागमों में इसकी नुमाईश खुले आम दिखाई देती है। नौजवान, अधेड़ उमर, सीनियर सिटीजन सब इसके शिकार दिखाई देते हैं। विदेशों से लम्बे लम्बे फोन आते हैं। कौन से सूट बनवा रहे हो, कितने चाहिए, कौन-कौन से रंग के बनवाने हैं। दिन में कई-कई बार पोशाकें बदली जाती हैं। दर्जी, कपड़े रंगने वाले, धोबी, ड्राईक्लीनरज़ आदि समय-समय पर व्यस्त रखे जाते हैं। घरों में प्रैस करने का प्रवाह लगातार चलता है। आधी-आधी दर्जन पोशाकें एक शादी पर हर स्त्री वा लड़की तैयार चाहती है। लड़के भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहते। माताएं बच्चों को, पत्नियां अपने पतियों को फैशन भरे लिबासों में देखकर खुश होती हैं, तृप्ति पाती हैं। लिबास ही आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

फैशन परस्ती, कपड़ों का इश्क एक समाजिक बड़ा रोग है। कोई भी महान कारज यह शौक रखकर होना कठिन है। क्या मैडम क्यूरी इतनी बड़ी वैज्ञानिक बन सकती थी या अपनी पुत्री को बना सकती थी यदि वह इन पोशाकों के इश्क में व्यस्त होती? संसार का कोई भी महान व्यक्ति पोशाकों के इश्क में जकड़ा हुआ नहीं मिलेगा।

मनुष्य की वास्तव सुन्दरता उसके उच्च मूल्यों को लेकर है। उसके स्वभाव को, उसके अन्दर के गुणों को, उसके भीतर के उच्च भावों और उच्च योग्यताओं को लेकर होती है। पागल मनुष्य लीरों के द्वारा इस घाटे को पूरा करना चाहता है, एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश में रहते हैं।

महात्मा गांधी इस विषय पर बहुत चिन्तित थे। वह फरमाते हैं :-

''पता नहीं यह आशोभ कब खत्म होगा। लोगों में कपड़ों के सम्बन्ध में नित नये फैशन जन्म ले रहे हैं। प्रार्थना में जो लोग इकट्ठे होते हैं, इसमें स्त्रियां भी बहुत संख्या में होती हैं। उनका हररोज़ रंग बिरंगा रूप देखकर मैं तो हैरान रह जाता हूँ। मुझे यह ओछापन बहुत खटकता है। औरतों को यह ख्याल होना चाहिए कि ऐसी सभाओं में सादगी व संजीदगी से आना चाहिए, परन्तु मैं देखता हूँ कि लिबास में सज-धाज का दौर बढ़ता ही जा रहा है। हमारी यह हालत मुझे कांटे की तरह चुभती है, परन्तु प्रार्थना सभाओं में कहां तक कहूँ? बहुत संभल कर बोलता हूँ। पूरी बात, खुलकर कहनी बहुत मुश्किल हो जाती है।

"पंजाब में तो आग भड़कती है। यहां से आने वाले लोग जब मुझे आपबीती सुनाते हैं, मुझे उसमें अपना ही दोष नज़र आता है। मैंने वहां की

बहनों को कहा भी कि लिबास वा पोशाक के मामले में आपने बहुत तरक्की कर ली है। जो सारी बदअमनी फैल रही है, उससे लड़कियों की असुरक्षा में बढ़ौतरी हो रही है, इससे एक बड़ी और खतरनाक हद तक लिबास वा पोशाक का भी हाथ है। परन्तु मेरी बात को उन्होंने अनसुना कर दिया।''

कुछ देर चुप रहकर और संजीदगी से सोचते हुए फिर उन्होंने कहा, ''जहां हमारी बात ज़रा भी सुनी जाती हो, वहां हमें इस गल्त रूझान को रोकने की कोशिश करते रहना चाहिए। तेरी बेटीयां भी अब बड़ी होंगी। (एक साथी को) तुम्हारा और लड़कियों की मां का यह फरज़ है कि उन के अन्दर फैशन के इस बुरे रूझान से बचने की अक्ल होश हो। तुम तो गांवों में काम करते हो, हरिजनों के साथ भी तुम्हारा सम्बन्ध है। जब भी तुम्हें ऊंचे वा नीचे स्तर की बहनों और बच्चियों में जाने का अवसर हो और तुम्हारा कुछ न कुछ प्रभाव उन पर पड़ सकता हो तो उन्हें भी यह शिक्षा दो नये-नये फैशन की अन्धी दौड़ से अपने आपको दूर रखें।

"तुम्हें पता है कि फैशन क्या है। पश्चिम की भयानक पैरवी की डरावनी शक्ल तुम्हें ख्वाब में भी नहीं आई होगी।"

''योरुप का यह फैशन सत्यानाश की जड़ है। टालस्टाय ने बड़े कड़े शब्दों में इसकी निन्दा की है। उन्होंने कहा है कि आज जिसको सुधारा हुआ फैशन परस्त समाज कहा जाता है, यहां उच्च स्तर की स्त्रियां अपनी पोशाक से चकाचौंध करने के पागलपन में लगी रहती हैं। उनके सारे फैशन का सीधा लक्ष्य यह होता है कि अधिक से अधिक पैसा खर्च करके अपने शरीर के अंगों को अधिक से अधिक दिखाया जावे।''

''आज़ादी तो मिलने वाली है, परन्तु यदि हमारा समाज विदेशियों की अन्धी पैरवी की ग्रंथी में उलझ जाएगा, तो आज़ादी मिली या न मिली, एक जैसी ही बात हो जावेगी। परन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके लिए हमें अपनी सारी ताकतें लगाकर लोगों को खबरदार करना होगा और पश्चिम के फैशन की अन्धी पैरवी से बचने की सलाह देनी होगी कि वह किस प्रकार फैशन में एक दूसरे पर जीत प्राप्ति की फजूल कोशिश में तबाही और बर्बादी की तरफ जा रही है।''

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

पति पत्नी के सम्बन्ध का महत्त्व

परिवार समाज की एक इकाई है और पति पत्नी इसकी धुरी होते हैं। अगर पति पत्नी में समानता हो तो घरेलू जीवन सुख चैन से गुजरता है। दो अलग-अलग परिस्थितियों में पले बढ़े हुए दो जनों को जब इकट्ठा रहना पड़ता है, तो तालमेल बिठाने के लिए एक संघर्ष शुरू हो जाता है। पत्नी के लिए यह एक नया वातावरण होता है, हमारी सभ्यता में अकसर लड़कियों को माता पिता ऐसी शिक्षा देते हैं कि उन्होंने अपने सब सम्बन्ध कैसे निभाने हैं, परन्तु लड़कों को इस प्रकार की शिक्षा कम ही मिलती है, फिर भी यह समंजस्य बिठाने के लिए लड़कियों का रोल ज्यादा होता है, जो लड़कियां शुरू में ही सहनशीलता से काम नहीं लेती या सिर्फ पति को लेकर ही possesive हो जाती हैं, वह परिवारिक जीवन में सफल नहीं होतीं, पुरुष पति होने के साथ-साथ बेटा, भाई भी है, यदि लड़की सब रिश्तों में सम्मान वा समझ बूझ से चलती हैं, वह सुखी परिवार बनाने में सफल हो जाती हैं इसमें पति का भी रोल होता है कि वह नई लड़की को नये वातावरण में ढालने में उसकी सहायता करे।

साधारणता आजकल लड़कियाँ शिक्षित हैं और इकलौती बेटी भी होती हैं, जिनके माता पिता ने उनके पूरे नख़रे उठाए होते हैं, यदि उनको एक दम परिपक्व औरत समझ लिया जाए तो पति वा परिवार को निराशा हाथ लगेगी।

पति पत्नी दो परिवारों से सम्बन्धित होते हैं, यदि पति पत्नी के मायके वालों के साथ सम्मान से पेश आएगा, तो उसका प्रभाव पत्नी पर भी पड़ना अवश्यक है।

धीरे-धीरे पति पत्नी का रिश्ता बहुत निकट का बन जाता है। वह हर प्रकार के दुःख सुख और संकट में एक दूसरे के साथी बनते हैं। लेकिन त्याग दोनों को ही करना पड़ता है। पत्नी घर परिवार, बच्चों की सारी जिम्मेदारी उठाती है। पति घर को चलाता है, परन्तु आधुनिक युग में पत्नियां बराबर कमा रही हैं, उसके बाद घर सम्भालना, बच्चों को सम्भालना, पति का ख्याल रखना, बच्चों का होम वर्क करवाना, अतिथियों को सम्भालना, यदि सास-ससुर, ननदें साथ हैं तो उनकी अवश्यकताओं का ख्याल रखना, ढेर सारी जिम्मेवारियां एक छोटी सी जान पर अचानक आ जाती हैं। एक-एक स्त्री दिनों में ही एक अल्हड़ लड़की से परिपक्व औरत बन जाती है। वह अपने पति और बच्चों के लिए अपने आराम, खान-पान, अपनी बहुत ही इच्छाओं को त्याग देती है। इतना सब कुछ करने के बावजूद आम घरों में पति अपनी दुनियां में मस्त रहते हैं उसकी इन सब सेवाओं की अवहेलना होती है। सुबह अखबार पढ़ना, पत्नी से ही जरूरत की चीजें मांगना, न मिलने पर चीखना चिल्लाना, उसकी भाग दौड़ को बहुत हल्के से लेना जिससे वह औरत, औरत न रहकर मशीन बन जाती है, जबकि छोटे-छोटे कामों में सहायता करके पति पत्नी के बोझ को हल्का कर सकता है। यह सब कुछ न करके भी पति पत्नी के इतने संग्राम के लिए दो शब्द प्रशंसा के भी नहीं कहता उल्टा नुकताचीनी करके पत्नी को निराश कर देता है तो ऐसे में मधुरता कहां से आ सकती है।

घरों में तनाव का बड़ा कारण यही है कि एक पक्ष ज्यादा त्याग करता है। वह अपनी खुशियों और

इच्छाओं को पीछे छोड़कर सब को खुश करने में लगा रहता है, और दूसरा साथी उसे उसका कर्त्तव्य समझकर उसकी अवहेलना करता है।

पत्नी तन मन से पति की सेवा करती है, उसके लिए किसी प्रकार का त्याग करने में संकोच नहीं करती, लेकिन पति उसको अपना हक समझकर हज़म कर जाता है।

पत्नी को बराबर का हक पाने का अधिकार है। वह दासी वा सेविका नहीं, एक इन्सान है, उसकी भी भावनाएं हैं, जज़बात हैं, कम से कम मीठे शब्द तो बोले ही जा सकते हैं। लफज जख़्म पर मरहम का काम करते हैं या फिर नश्तर बनकर चुभ भी सकते हैं।

इसी प्रकार पत्नी को अपनी सुचज्जता, सहनशीलता, त्याग से सबका मन जीतना होता है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि अन्याय को सहना अपना धर्म समझे। उसके लिए उसे अपनी सुरक्षा करनी अवश्यक है। यदि कुछ आपसी समझबूझ, शुक्रगुजारी, सम्मान रखा जाए, दूसरे के त्याग सेवा के लिए प्रशंसा के दो शब्द दिल से कहे जाएं तो यह सम्बन्ध एक वरदान बन जाता है।

पति पत्नी एक दूसरे के सबसे उपयोगी सलाहकार होते हैं, कई बार पतियों का अहंकार उससे लाभ नहीं उठाता। हर बात में कोई भी साथी निपुण नहीं होता, परन्तु यदि एक दूसरे के गुणों को स्वीकार करके उसकी खुले दिल से सच्ची प्रशंसा की जाए, तो साथी का उत्साह बढ़ता है।

श्री पी. वी. कनल जी जो देव समाज में उच्च कोटि के अंग्रेजी के लेखक भी थे, देवात्मा के मिशन में उनकी कुर्बानी असाधारण थी, परन्तु उनका यह पति पत्नी के रिश्ते का पहलु भी समाज में एक अलग स्थान रखता था उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है कि "मैं खुशकिस्मत रहा हूँ जो मुझे ऐसी पत्नी मिली" और आगे उन्होंने लिखा है कि जब कोई दूसरा मेरी प्रशंसा करता है तो मैं उसे यह याद दिलाना चाहता हूँ कि मेरी इन उपलब्धियों के पीछे एक महान औरत है, जो मेरी सच्ची, बहुत वफादार मित्र और सलाहकार रही है।"

उनके जीवन गुरु मिशन भेंट करने, उस पर चलने में जो कठिनाईयां आई, उन्हें सहने में उनकी पत्नी का पूरा सहयोग रहा, इसलिए बेबाक कनल जी उनकी प्रशंसा करते थे।

उच्च मिशन में पति का साथ निभाना, उनकी विशेषता थी, इसलिए वह इस प्रशंसा की हकदार थी। कनल जी सम्बन्धों में मधुरता, स्थिरता, प्यार वा सम्मान को बहुत महत्त्व देते थे। बच्चों को भी वह बहुत प्यार करते थे, उन्होंने लिखा है कि "बच्चे एक वरदान होते हैं, यदि उनकी पालना में उच्च गुणों को आधार बनाया जाए।

पति पत्नी एक दूसरे के पूरक है, सच्चे साथी हैं, उपयोगी सलाहकार हैं, वह सुखी परिवार की नींव हैं, वह फूलों की तरह महकते हुए बच्चों के निर्माता हैं, यदि वह बच्चे समाज का एक लाभदायक अंग बन सकें, यह पति पत्नी की सबसे बड़ी सोसाईटी को देन है।

स्वार्थ, घृणा, कृतघ्नता इस समबन्ध की मिठास को चूस लेती है, तो त्याग, सेवा, शुक्रगुज़ारी जीवन रूपी पौधे को सींचकर उसे फल-फूल लगने के योग्य बनाते हैं।

आखिर में शादी पर कनल जी के यह शब्द लिखना चाहूँगी, जो उन्होंने अपनी जीवनी में लिखे हैं:-

"यदि शादी का अर्थ इतना कीमती जीवन

साथी पाना है (यदि साथी में सचमुच उपरोक्त गुण हों) तो इसके लिए कोई भी कीमत चुकाना सार्थक है।"

कनल जी स्त्री जाति के लिए बहुत गहरा सम्मान वा कृतज्ञता का भाव रखते थे। उन्होंने लिखा है: -

"मेरी माता के प्रति सम्मान बहुत genuine है। स्त्री जाति का सम्मान एक महान नैतिक Value है। औरत मातृत्व को represent करती है। जो मातृत्व का सम्मान करने में असफल हो जाते हैं, और सम्मान भावना से वंचित है, उनका नैतिक पतन होता है।

मेरा बचपन केवल एक स्त्री के अथाह प्रेम की बारिश से सम्भव हुआ है, मैं उस औरत को कैसे भुला सकता हूँ? मैं उनके फर्ज़ को कैसे भुला सकता हूँ, मैं कैसे भुला सकता हूँ कि उन्होंने मुझे बचपन में वह सब कुछ दिया, जिसके लिए मेरी रुह भूखी थी। माता का प्यार, अतुल्य है। अनगिणत जिन्दगियां इस प्यार का सदका बचती हैं। कनल जी औरत के हर रूप के अभारी अनुभव करते थे, चाहे वह मां का रूप हो, बहन का हो और पत्नी का हो।

जहां स्त्री की भावनाओं को पैरों तले रौंदा जाता है, जहां बहनों की कुर्बानियों को अनदेखा किया जाता है, जहां पत्नी को पैर-पैर पर तिरस्कृत किया जाता है, ऐसे संसार में स्त्री को मां, बहन वा पत्नी के रूप में सम्मानित करना कनल जी के दिल की विशेषता थी जो विशेषता परम पूजनीय भगवान देवात्मा के चरणों में आकर निखर गई।

जो मां का सम्मान करता है, वही जन अच्छा भाई वा पति बन सकता है, परिवार को स्वर्ग बनाने में सहायक हो सकता है।

सुरजीत बराड़

शोक समाचार

बहुत शोक कि बहुत सम्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी की वृद्ध माता जी का 15 मार्च को देहान्त हो गया है। वह कुछ समय से रोग ग्रस्त थी। वह 81-82 वर्ष की उमर की थी। वह कई गुणों की मालिक थी।

उनके तीन पुत्र और दो बेटीयां हैं। सारे परिवार को इस मौत से घाटा पड़ा है। हम भी श्रीमान जी वा उनके परिवार के प्रति अपनी हमदर्दी और शोक का प्रकाश करते हैं और देह त्यागी जी की आत्मा की शान्ति और भले की कामना करते हैं।

सम्पादक

श्रीमान बलबहादुर जी का फोन नं० है। 0164 – 2755153 , मो : 9463 551195

सम्बन्धों में ही जीवन है।
(श्रेष्ठ कैसे बनें?)

श्रेष्ठ जीवन के लिए मूल बोध की उपलब्धि अपने भावों को पहचानना है। इस वास्तविकता की स्वीकृति तथा कदरदानी करने का अर्थ है कि मेरा जीवन अन्य असंख्य प्राणियों के जीवन के कारण है। मैं केवल दूसरों के कारण ही जीवित रह सकता हूँ। मेरी हस्ती केवल मात्र दूसरों पर निर्भर करती है। यद्यपि मेरा जीवन मानव के रूप में हुआ है, फिर भी जब तक मुझे अन्य मानवों के साथ सम्पर्क तथा सक्रिय जीवन का अवसर प्राप्त न हो तब तक मुझे मानवता का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सकता। मेरा मानव जीवन अन्य लोगों के सम्पर्क का सतत् परिणाम है। यदि मुझे बाल्यकाल से मानव की संगति से अलग कर दिया जाता और मेरा पालन पोषण किसी पशु की संगति में होता तो मुझमें मानव की बुद्धि का अभाव होता और मानवता के भावों और व्यवहार की भी मुझमें कमी होती। मुझमें एक गंदर्भ की बुद्धि और पशु का चरित्र विद्यमान होता। मेरा मानव के रूप में जीवन मेरे मानव माता-पिता तथा मानव की संस्कृति के सम्पर्क के कारण सम्भव है। यह मानव समाज के भिन्न नहीं है। यह एक दूसरे से गुँथा हुआ और बुना हुआ है। इसका आधार ही मानवता है। मुझे मानव का स्वरूप देने में मानव के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं है, किसी दिव्य शक्ति का साधन भी नहीं।

मेरा जन्म मेरे माता-पिता के कारण है। मेरा आत्मा और शरीर दोनों उन्हीं की देन हैं। मुझे अपने जीवन में जो विरासत मिली है उसके लिए मैं उनका ऋणी हूँ। मेरे शरीर की प्रत्येक कोशिका, प्रत्येक भाव, सुझाव, योग्यता, समझ, यहाँ तक कि मेरा आत्मा सबका आरम्भ मेरी पैतृक देन है। मेरे आत्मा की प्रत्येक योग्यता और बोध सच्चे अर्थों में मुझे विरासत में मिले हैं। इसके लिए कोई अन्य वास्तविक परीक्षण के योग्य प्रमाण नहीं है जिससे निश्चित हो सके कि मेरा जीवन अन्य किसी प्रकार या साधन से प्राप्त हुआ है और यह अडोल प्रमाण प्रतिदिन दोहराया जाता है, यहाँ तक कि मानव का व्यक्तित्व अर्थात उसका शरीर और आत्मा दोनों माता-पिता की देन हैं। मेरा जन्म मेरे माता-पिता से अन्य किसी भिन्न कारण से नहीं हुआ। वे मेरे जन्म दाता हैं, यही मेरे जीवन के सम्बन्ध में अटल सत्य है।

यह सत्य है कि मैं अपने माता-पिता से भिन्न हूँ। इसका अर्थ यह नहीं है कि मेरे जीवन का आधार कोई अन्य है। मेरे और मेरे माता-पिता के बीच एक कार्य कारण सम्बन्ध विद्यमान है। ये सम्बन्ध योगात्मक न होकर स्वभाव में प्रजनात्मक है। यदि हम जल और चीनी को मिला दें तो हम उनके प्रभाव को घूँट भर कर ही जान सकते हैं। यह प्रभाव जो चीनी के मिश्रण से हुआ है योगात्मक है। परन्तु जब हम विद्युतीकरण के द्वारा आक्सीजन और हाईड्रोजन को मिलाते हैं तो हमें जल की

प्राप्ति होती है। यह जल की प्राप्ति सृजनात्मक प्रभाव के इसके अपने ही अलग गुण हैं जो कि इसके प्रजनन के कारणों से भिन्न हैं, चाहे वह हाईड्रोजन हो या आक्सीजन। यद्यपि जल उनका ही परिणाम है। बिना हाइड्रोजन और आक्सीजन और विद्युत के जल के अस्तित्व में आने का अन्य कोई कारण नहीं है। यद्यपि जल अपने में एक विशेष अस्तित्व रखता है जो उसके कारणों से भिन्न है। ठीक इसी प्रकार मानव भी अपने माता-पिता के जीवाणुओं के रसायनिक मिश्रण का परिणाम मात्र है और यह प्रजनात्मक प्रभाव है। विभिन्न जीवाणुओं का एक विशेष परिमाण में रसायनिक मिश्रण शिशु के विशेष गर्भ धारण की स्थिति को निश्चित करता है।

अपने माता-पिता से विभिन्नता मुझे इस असत्य परिणाम पर नहीं पहुँचाती कि मेरी रचना उनके द्वारा नहीं हुई। इस प्रकार का परिणाम निकालना शरीर सम्बन्धी उत्पत्ति विज्ञान की अनभिज्ञता के कारण है। इसका एक अन्य कारण योगात्मक अर्थात् सृजनात्मक कार्य कारण सम्बन्ध से परिचित न होना भी है। मेरी विशेषता पैतृक और सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम मात्र है।

मैं अपने शरीर और आत्मा के बीच अन्तर को परिलखित करता हूँ। उसमें भेद को स्पष्ट कर सकता हूँ। विचारों के एकीकरण के द्वारा मैं अपने शरीर और आत्मा को पृथक-पृथक समझ सकता हूँ, परन्तु जो कुछ भी विचारों के द्वारा पृथक-पृथक किया जा सकता है, वह वास्तव में पृथक है ही, ऐसा नहीं हैं, यह अरस्तु का मत है। आदर्श के दर्शन में यहाँ-वहाँ कुछ अपवादों को छोड़कर कर यही बहुत बड़ी भूल की गई है कि आत्मा को शरीर से स्वतन्त्र जाना है, आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता को स्वीकार किया है जो कि किसी प्राकृतिक दुर्घटना के कारण शरीर से सम्बद्ध हो गया है। इस दर्शन का विश्वास है कि आत्मा अनादि, अविनाशी, नित्य और अपरिवर्तनशील सत्ता है, यह असत्य विश्वास ही विचारों के पृथक्कीकरण का मूल कारण है। जो कुछ भी विचारों के द्वारा पृथक अवस्था में प्रतीत होता है, वह वास्तव में अपनी पृथक सत्ता भी रखता है।

मैं अपने और अन्य अस्तित्वों के बीच एक अन्तर को लक्षित कर सकता हूँ। अपने को सामाजिक स्थिति से पृथक करने की क्षमता भी रखता हूँ। परन्तु ये सब विचारों के पृथक्करण का प्रभाव है। इस प्रकार मैं यह असत्य धारणा भी बना सकता हूँ कि मेरा अन्य अस्तित्वों से कोई सम्बन्ध नहीं है और दूसरों से कोई सम्बन्ध न रखकर मैं जो कुछ हूँ वही मेरा सत्य स्वरूप है। इस प्रकार की विचारधारा का एक उदाहरण प्रस्तुत है।

आचार्य रजनीश जिन्हें अब "भगवान रजनीश" कहा जाता है, उन्होंने अपनी एक पुस्तक 'आत्मानुभूति का मार्ग' में लिखा है-स्वयं को सभी प्रकार के सम्बन्धों से पृथक कर लो, ऐसा जानो कि तुम अपने माता-पिता के पुत्र नहीं हो, अपनी पत्नी के पति भी नहीं हो, अपने बच्चों के पिता भी नहीं हो, तुम किसी के न मित्र हो न शत्रु, और बस यहाँ जो कुछ बोध शेष रह जाता है वही तुम्हारा सत्य स्वरूप है।

ऐसा कम अनुभव किया जाता है। जो कुछ भी बोध शेष बच गया है वह केवल गर्भ स्तर पर होने वाली प्राथमिक मूल गति बोधक सनसनी मात्र है। इस प्रकार के विचारों के एकीकरण के अभ्यास के फलस्वरूप यह भूल हो जाती है कि आत्मा के सामाजिक और संस्कृति के सम्पर्क और प्रभाव में आने में पहले स्वभाव को आरम्भिक गुणमान लिया जाता है। इस असत्य धारणा का भेद खुलने पर हम देख सकते हैं कि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से कहा जाए तो आत्मा अपने गर्भ स्तर पर मात्र स्नायु पुञ्ज का कम्पनमात्र है और आत्मचेतना के सभी मूल्यवान गुण सामाजिक आदान प्रदान के सम्पर्क का परिणाम मात्र हैं।

बौद्धिक भ्रम इस विलोपन का अवरोध करता है क्योंकि इससे मेरे अहंकार और सुरक्षा की भावना को बल मिलता है। मेरा यह विचार कि मेरा जीवन मेरे ही कारण है, मेरे अभिमान पूर्ण चिन्तन के लिए अधिक आराम दायक है, मेरा जीवन अन्य सब प्राणियों के जीवन से स्वतंत्र है। मेरे जीवन का आधार ईश्वर है अन्य कुछ नहीं। अपने जीवन के प्रति मोह मुझे यह सन्तोष देता है कि मेरी रचना नहीं हुई, न ही मेरा नाश हो सकता है। अत: मैं अपने में शाश्वत हूँ और ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी में मुझे प्रभावित करने की शक्ति नहीं है। यदि हम अपने व्यर्थ के अभिमान का और अपने जीवन के प्रति मोह का त्याग कर दें तो हम इस सत्य के दर्शन कर सकेंगे कि हम सब का जीवन, इसका प्रारम्भ और विकास सब दूसरों के साथ सम्बन्ध पर आधारित है। इसका प्रारम्भ पराश्रय से हुआ है।

आत्मा और शरीर का अकाट्य सम्बन्ध है और इसी प्रकार मेरा अपना आप और समाज का सम्बन्ध भी। शरीर और आत्मा दोनों का प्रारम्भ और विकास पृथ्वी पर विद्यमान परिस्थितियों के अधीन है। मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व, आत्मा तथा शरीर गर्भ के स्तर तक केवल मेरे माता-पिता तथा वंश की देन है। इसी प्रकार पालन पोषण तथा विकास भी। मेरा शारीरिक पोषण अपने बाल्यकाल में भोजन और अन्य घर के प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर करता है। मेरी बौद्धिक संस्कृति, मेरा भाव, चरित्र और प्रेरणाएं मेरे माता-पिता की देन हैं। इसका मेरे बाद के विकास पर पूर्ण प्रभाव रहता है। जैसे जैसे मैं बड़ा होता हूँ, मेरे विद्यालय की सभ्यता और समाज की सभ्यता का मुझ पर निरन्तर प्रभाव पड़ता है। मैं ज्ञान और अन्य कलाओं का प्रकाश प्राप्त करता हूँ। इसी प्रकार सौन्दर्य के प्रति प्रेम और चरित्र को भी मानव समाज के सम्पर्क से मैं ग्रहण करता हूँ। इसे सैकड़ों शताब्दियों के प्रयोग द्वारा मानव ने प्राप्त किया है। अपने जीवन में इन सब प्राप्तियों के लिए मेरे मन में कृतज्ञता का भाव उत्पन्न होता है।

(चलता)

धर्म की दुकानों के चमकते धंधे

फिल्म अभिनेता आशुतोष राणा इन दिनों फिल्मों में कम धार्मिक कार्यक्रमों में ज्यादा नज़र आ रहे हैं, अर्धकुंभ में तो उस ने अपने गुरु के पंडाल में रह कर खासी भीड़ जुटाई थी। लगातार दूसरे साल आशुतोष ने लाखों रुपए खर्च कर रूद्राभिषेक का आयोजन एक होटल में किया उस के साथ एक और फिल्म अभिनेता राजपाल यादव भी था। इन दिनों अभिनेताओं को देखने आई भीड़ ने कोई 1 करोड़ से भी ज्यादा मिट्टी के शिवलिंग बना डाले अपने गुरु की दुकानदारी चमकाने के लिए उस ने यह तक कह दिया कि गुरु प्रभाकर शास्त्री की कृपा से उस की जिंदगी बिल्कुल बदल गई है।

आशुतोष राणा या राजपाल यादव ही नहीं बल्कि नाकामी की मार झेलते ज्यादातर फिल्मी कलाकारों को अंधविश्वासों और पाखंडों की बीमारी जल्दी घेर लेती है और वे अपने मनपसंद गुरुओं के प्रति आस्था जताते यह कहने से नहीं चूकते कि भक्ति का मजा की कुछ और है।

मगर इस भक्ति की हकीकत भी जल्दी उजागर हो जाती है। भोपाल में रुद्राभिषेक आयोजन के चौथे दिन ही खासी भीड़ के बीच आशुतोष अपनी शीघ्र प्रदर्शित होने वाली फिल्म 'आवारापन' का प्रचार करता नजर आया। राजपाल यादव ने भी मौके का फायदा उठाते हुए, "हैलो मैं लंदन बोल रहा हूँ' फिल्म में अपने किरदार का खुलासा किया।

गुरु प्रभाकर शास्त्री और शिव तो एक तरफ हो गए, दोनों फिल्म अभिनेताओं ने अपनी-अपनी फिल्मों का प्रदर्शन के पहले ही खासा प्रचार कर साबित कर दिया कि इस तरह के धार्मिक आयोजन अब धंधा बनते जा रहे हैं। इस आयोजन के प्रचार प्रसार में जम कर पैसा इसीलिए फूंका गया कि ज्यादा से ज्यादा भीड़ जुटे और प्रचार के रूप में इसका फायदा मिले।

भक्त होने का दावा करने वाले आशुतोष की यह हताशा ही थीकि प्रचार के लिए उसे धार्मिक मार्केटिंग जैसे सस्ते टोटके का इस्तेमाल करना पड़ा। पिछले 4 सालों से हिट फिल्म का इंतजार कर रहे आशुतोष का फिल्मी कैरियर डांवांडोल है।

इस तरह के तामझामसे कितना और किस तरह का नुकसान होता है, यह बात प्रवचन और भजनकीर्तन के शोरशराबे में दबजाती है और अंधभक्ति के चलते लोग नतीजों की गंभीरता पर ध्यान नहीं देते। रुद्राभिषेक में 1 करोड़ शिवलिंग बनाने के लिए मिट्टी जाहिर है। किसी खेत से ही खेद कर लाई गई थी। अगर एक शिवलिंग बनाने में 100 ग्राम मिट्टी भी लगी तो 1 करोड़ शिवलिंग बनाने में 1 लाख क्विंटल मिट्टी जाया कर दी गई। मगर आशुतोष राणा या हजारों भक्तों ने इस बात से कोई सरोकार नहीं रखा कि भूमि कटाव की समस्या से जूझती

खेतीकिसानी को अपनी अंधभक्ति का शिकार न बनाया जाए।

कई नामीगिरामी व्यायसायिक कंपनियां भी इसी तर्ज पर काम करते हुए धार्मिक मार्केटिंग करने वालों को तबीयत से भुना रही हैं। कोई योग बेचने वालों का पल्लू पकड़े हुए है तो कोई ध्यान में मुनाफा ढूंढ रहा है। अध्यात्म की आड़ लेकर भी उत्पादों का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। धार्मिक मार्केटिंग के गोरखधंधों को नामी बाबाओं और संतों ने चमका कर रख दिया है। निशाना सेहत और मानसिक शांति के तरीकों से ज्यादा है। पहले लोगों को यह बताया जाता है कि तुम नित तनाव और परेशानी में जी रहे हो उस की वजह भौतिकता और भोग है। इन परेशानियों से निजात चाहिए तो योग करो, ध्यान लगाओ और अध्यात्म की शरणमें आओ।

एक अनुमान के मुताबिक धार्मिक मार्केटिंग का बाजार 200 अरब रुपए के हैरत भरे आंकड़ेको छू रहा है। अध्यात्म से संबंधित उत्पादों को खरीदने में ही लोग 1,500 करोड़ रुपए खर्च करते हैं। फिटनेस, स्पा, खानपान और सौंदर्य प्रसाधनों पर अरबों रुपए फूंके जा रहे हैं।

किसी बाबा का योग हो या किसी माता का प्यार भरा आलिंगन इन के साथ-साथ श्री-श्री रविशंकर की सुदर्शन क्रिया और महेश योगी का ध्यान भी नामी कंपनियां खरीद रही हैं। हीरो होंडा, जी.ई. कैपिटल, मोटोरोला, बी.पी. एल. और वीडियोकौन जैसी कंपनियां इन संतों और उनके ध्यान, योग की प्रमुख ग्राहक हैं।

इन कंपनियों की सोच साफ है। अगर सामान बेचना है तो लोकप्रिय हो गए गुरुओं का सहारा लेना फायदे का सौदा है। बाबा, संत और गुरु पहले लोगों को यह बताते हैं कि शांति तो घर बैठे बिठाए भी हासिल की जा सकती है इस के लिए अब जंगलों, पहाड़ों या गुफाओं में जा कर भटकने की जरूरत नहीं। बस हमारे बताए उपायों को अपनाए जाओ जिन में फलां फलां चीजें सहायक होती हैं।

आडियोवीडियो कैसेट, किताबों और रूद्राक्षों से लेकर कीमती पत्थर जिन्हें रत्न कहा जाता है, धड़ल्ले से स्वास्थ्य और शांति के नाम पर बिक रहे हैं। अभी धार्मिक मार्केटिंग शुरूआती दौर में ही कही जाएगी मगर कतई हैरानी की बात नहीं होगी अगर बाबा और गुरु बड़ी कंपनियों के ब्रांड एम्बेसेडर बनने लगें। जो लोग पैसे के लिए भगवान तक को बेचने का करिश्मा कर सकते हैं वे पैसे के लिए कुछ भी बेचने को तैयार क्यों नहीं होंगे।

फलतीफलती इस दुकानदारी की जड़ में धर्म है, उस से जुड़े अंधविश्वास, पाखंड और कमजोरियां हैं। प्रचार के लिए भीड़ जुटानी है चाहे वह फैशन शो से जुटे या रुद्राभिषेक से, दोनों तरीके अपनाए जाते हैं। इसे अपनाने वाला आशुतोष राणा हो या कोई कंपनी, उन्हें अपने व्यवसाय और लाभ से मतलब है। जेब तो बेचारे उपभोक्ता की कटती है जो भक्त की शक्ल में होता है, जागरूक ग्राहक की भूमिका में नहीं।

जीवन प्रसंग

फर्ज पूरा करने का अवसर न खोएं - 1

इंसान को फर्ज पूरा करने के लिए जिंदगी तमाम अवसर प्रदान करती है। वह न तो किसी का इंतजार करती है और न ही कुछ कर पाने में असमर्थ रहने के लिए पश्चाताप का मौका देती है।

जब आप 8 साल के थे तो आपके पिताजी ने आपको आइस्क्रीम खरीदकर दी थी। इसका सिला आपने यह दिया कि सारी आइस्क्रीम पिघलकर आपके कपड़ों, कंधो, हाथ-पांव और जमीन पर गिरी और बेकार हो गई। जब आप 9 साल के थे तो पिता ने आपको पियानो क्लास ज्वाइन कराया, साथ ही समय पर फीस भरने में भी हरसंभव सावधानी बरती, लेकिन आपने एक बार भी रियाज करने की जहमत नहीं उठाई।

जब आप 10 साल के हुए तो पिता ने आपको हर खुशी उपलब्ध कराने में व्यक्तिगत रूप से गहरी रुचि ली। खुद गाड़ी चलाते हुए वे आपको शहर में होने वाले हर क्रिकेट, हॉकी मैच दिखाने ले गए। जन्मदिन की पार्टी भी आयोजित की। बदले में आपने उनकी भावनाओं को समझने की कभी कोशिश ही नहीं की और मटरगश्ती में डूबे रहे। 11 साल की उम्र में पिताजी आपको आपके दोस्तों के साथ फिल्म दिखाने ले गए, लेकिन आपने उन्हें मित्र मंडली से अलग सिनेमा हाल की दूसरी कतार में बैठने को कहा। 12 साल की उम्र में उन्होंने आपको कुछ अनपेक्षित टीवी शो और चैनल न देखने की चेतावनी दी, लेकिन बदले में आप हमेशा उनके घर से बाहर जाने का इंतजार करते रहे, ताकि बेरोकटोक शो देख सकें।

13 साल की उम्र में उन्होंने आपको बेहूदा किस्म का हेयरकट न कराने का सुझाव दिया। इस पर बिना हिचके आपने उन्हें पुराने जमाने का और दकियानूसी विचारों वाला कहने में देर नहीं की। जब आप 14 साल के हुए, तब उन्होंने आपको पिकनिक और लंबे टूर पर जाने के लिए पैसा दिया, पर सैर-सपाटे की खुशी में आप इतने डूब गए कि उन्हें कॉल करने तक की जहमत नहीं उठाई। जब आप 14 साल के थे तो वे एक दिन काम से थके-हारे घर आए और आपको सीने से लगाने के लिए उनकी निगाहें तलाशती रहीं, मगर आप अपने कमरे को लॉक कर सोते रहे। आपके सोलहवें साल पर उन्होंने आपको अपनी कार से ड ाइविंग सिखाई। इसका सिला आपने यह दिया कि हर मौके-बेमौके पर उनकी कार लेकर गायब हो जाते थे और वे हमेशा इंतजार करते रहे। उस समय आप 17 साल के थे, जब एक दिन आपके पिता एक अर्जेंट काल का इंतजार कर रहे थे और आप फोन पकड़कर बैठे हुए थे। जब आप 18 साल के थे तो वे आपके इंटरमीडिएट परीक्षा के नतीजों को लेकर चिंतित थे, आपसे बातें करने को बेचैन थे, लेकिन आप सुबह तक पार्टीबाजी में डूबे रहे। जब आप 19 साल के थे तो उन्होंने आपके कॉलेज की फीस भरी और कैंपस हॉस्टल से आपका बैग और साजो-सामान खुद कंधो पर ढोकर ले गए। आपने उन्हें पैर छूकर हॉस्टल के गेट से ही खिसका दिया, ताकि कहीं आपको दोस्तों के सामने शर्मिंदा न होना पड़े।

जब आप 25 के थे तो उन्होंने आपकी शानदार शादी में कोई कोरकसर बाकी नहीं रखी।

इसका सिला आपने ऐसे दिया कि जीवन-संगिनी को लेकर आप अपने माता-पिता की नजरों से हमेशा के लिए दूर हो गए। जब आप 50 के थे तब आपके पिता बीमार पड़ गए। उन्हें देखभाल के लिए आपकी सख्त जरूरत थी। उस समय आपने उन्हें कहा कि आपके पास फुर्सत नहीं और माता-पिता बच्चों के लिए बोझ के सिवा कुछ नहीं है। एक दिन आपके पिता बिना गिले-शिकवे के चुपचाप इस संसार से विदा हो गए। आखिरकार इस अंतिम घड़ी में आपका दिल यह कहकर चीत्कार कर उठा कि हाय! पिता के लिए मैंने कुछ नहीं किया। फंडा यह है कि इंसान को फर्ज पूरा करने के लिए जिंदगी तमाम अवसर प्रदान करती है। वह न तो किसी का इंतजार करती है और न हीं कुछ कर पाने में असमर्थ रहने के लिए पश्चाताप का मौका देती है।

नहीं तो वे मेरे साथ जाते - 2

जब हम क्षमा करते हैं तो यह तीन तरह से काम करता है। क्षमा करके हम अपनी वास्तविक पहचान बनाए रखते हैं। मेरी नजर में यह अस्तित्व को बनाए रखने की रणनीति भी है। क्षमा करके आप स्व-परिचय, विशिष्टता और वास्तविक 'स्व' को संरक्षित करते हैं। दूसरा, आप समाज में एकता के प्रति संगठन की स्थिति उत्पन्न करते हैं। सच्चे मायनों में यह समाज और आने वाली पीढ़ी में सामाजिक मूल्यों की रचना करने का काम भी बड़ी दक्षता से करता है। इसका तीसरा उपयोग है युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श के रूप में सामाजिक मूल्यों को निरंतरता देना। किसी भी राष्ट्र के निर्माण के लिए सिर्फ दो ही रास्ते हैं। अच्छाई के लिए अच्छा दिमाग और अच्छा हृदय हमेशा प्रेरणास्पद समन्वय होता है। किन्तु इन्हें अच्छा बनाने का कार्य क्षमा करती है। वह मनुष्य के हृदय को पूर्व अवधारणाओं और दिमाग को पूर्व विचारों से मुक्त करके निर्मल बना देती है। यह मनुष्य को सीखना, पनपना और महान बनना सिखाती है।

समाज के लिए ही नहीं किसी रिश्ते के लिए भी क्षमा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि आप जो हैं, वहीं रहेंगे और जल्दी ही आपका साथी इस बात को जान जाएगा। ऐसे में आपको एक-दूसरे को स्वीकार करना और क्षमा के जरिए एक छत के नीचे कैसे रहा जाए यह सीखना होगा।

करीबी रिश्ते जैसे विवाह में कोई गोपनीयता नहीं रहती, आपके सभी वास्तविक रंग इसमें नजर आते हैं और कई बार इन्हीं की वजह से आपके साथी को खीझ होती है। जब आप क्षमा करना सीख जाते हैं तो यह खीझ और गुस्सा खत्म हो जाता है। सिर्फ क्षमा के बदौलत ही आप साथ बने रहते हैं। विवाह में एक साथ बने रहने के लिए क्षमा के गुर सीखना बहुत जरूरी है। विवाह, किसी फुटबॉल टीम की तरह होता है, जिसे विरोधियों पर विजय हासिल करने के लिए टीमवर्क की जरूरत पड़ती है। इसे संभव करने के लिए खिलाड़ियों के बीच एकता होनी चाहिए। जब विवाह के बंधन में बंधे दो व्यक्ति एक दूसरे को माफ करते हैं तो वे आसानी से संवाद करने में सक्षम रहते हैं और एक अच्छी टीम बनाते हैं। वे बंध जाते हैं तो एकजुट होकर कई परेशानियों से बाहर आ सकते हैं। जो व्यक्ति से अकेले संभव नहीं हो सकता।

विवाह में ही नहीं परिवार में भी क्षमा आदर्श भूमिका निभाती है, हालांकि यह काम थोड़ा मुश्किल होता है क्योंकि क्षमा करने के लिए त्याग की जरूरत होती है। दूसरों को उनकी गलतियों के लिए माफ

करना आसान होता है, लेकिन अपने करीबी लोगों को माफ करना मुश्किल होता है। अपना परिवार या अपने करीबी जब मन को ठेस पहुंचाते हैं तो हम भावनात्मक रूप से बहुत ज्यादा क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। उस वक्त हम स्वयं को असुरक्षित भी समझने लगते हैं। बाहरी लोगों को ऐसी क्षति पहुंचाने का अवसर बहुत कम मिलता है, जबकि परिवार में हमें इन परिस्थितियों का सामना बार-बार या जिंदगी भर करना पड़ता है। ऐसे में हर रोज किसी की गलतियों को भूल जाने के लिए बहुत सारी ताकत की जरूरत पड़ती है। यह ताकत क्षमा करने के अभ्यास से हासिल की जा सकती है। जब हम क्षमा करते हैं तो यह प्रक्रिया हमारे मन में पड़े मैल को साफ कर देती है। मन द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, पाप से मुक्त होकर स्वच्छ हो जाता है जैसे धूप निकलने पर पत्तियों पर जमी ओस के साथ धूल-मिट्टी भी साफ हो जाती है और चमकदार पत्ते नजर आने लगते हैं।

मैं यह बात स्वयं को महान साबित करने के लिए नहीं कर रहा हूँ बल्कि खुद मैंने इसे मन की गहराईयों से महसूस किया है। एक बार अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने मुझसे पूछा 'दक्षिण अफ्रीका में समानता और प्रजातिभेद को खत्म करने की लड़ाई में आपने रॉबेन द्वीप कैदखाने में 27 साल बिताए, वहां के जेलर ने आपको प्रताड़ित किया, जबकि छूटने के बाद आपने सम्मान समारोह में जेलर को आमन्त्रित करने के लिए सरकार पर दबाव डाला। इतना ही नहीं जेल से छूटने के बाद आपने अपने समुदाय के लोगों से गोरे लोगों को माफ करने की गुजारिश की, लेकिन मुझे सच बताइए, क्या आपको अपने साथ हुए अन्याय पर कभी गुस्सा नहीं आया? मैंने उन्हें कहा 'हां, मुझे गुस्सा आया था। मैं थोड़ा डर भी गया था। आखिर मैं बहुत लंबे समय तक आज़ाद नहीं हुआ था।' 'लेकिन जब मैंने महसूस किया कि मेरे अंदर उनके प्रति गुस्सा मजबूत हो गया है तो मैंने जाना कि अगर मैं उनसे नफरत करता रहा तो जेल के उस गेट से बाहर जाने के बाद भी वे मेरे साथ ही रहेंगे।' मैं पूरी तरह आज़ाद होना चाहता था, इसलिए मैंने उस घटना को भुला दिया।' यह मेरे जीवन का आश्चर्यजनक पल था। उस पल ने मुझे बदल कर रख दिया।

मुझे लगता है अगर मेरे साथ यह दुखद घटना न हुई होती तो शायद मैं इसे समझ ही नहीं पाता। क्षमा करना शरीर और आत्मा को दुरुस्त करने की यात्रा है। जब आप किसी व्यक्ति को क्षमा करते हैं तो मन को उसके लिए निरंतर चलने वाली नकारात्मक भावनाओं के बोझ से मुक्त कर देते हैं। फिर क्रोध, शिकायत आदि पर खर्च की जाने वाली ऊर्जा का बेहतर इस्तेमाल मन पर लगी ठेस का उपचार करने के लिए करते हैं। यह हमारे भीतर हमेशा मौजूद रहने वाली क्षमता को वापस खोजने, समझने और दूसरों और अपने आपको अपनाने की असीमित क्षमता को वापस पाने का जरिया है। यही वजह है कि क्षमा हमारी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा होना चाहिए। हमारे मन में क्षमा का बीज बोने का काम बचपन से शुरू होना चाहिए। परिवार ही वह पहला स्कूल है, जिसमें इसकी शिक्षा दी जा सकती है। जब माता-पिता एक-दूसरे को माफ करना सीख जाते हैं और अपने बच्चों को वास्तविक जीवन में क्षमा करने का महत्त्व समझते हैं तो बच्चे इस गुण को सीखते हुए बढ़ते हैं, इसलिए वे इस अवधारणा का सम्मान करते हैं जो उन्हें बड़ा होने की प्रक्रिया में उनके मस्तिष्क को शांति देती है। आगे चलकर यही बच्चा परिवार, समुदाय, समाज और राष्ट्र में इन मूल्यों और एकता को बनाए रखने का काम करता है।

(नैल्सन मण्डेला)

दक्षिणी के पहले अश्वेत राष्ट्रपति
शान्ति नोबेल पुरस्कार विजेता

शुभ संग्राम

पदमपुर (राजस्थान)

11 मार्च, सुबह श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से यहां पहुंचे। रात को मन्दिर में एक सभा की गई। इस सभा में बताया गया कि इन्सान ईश्वर, देवी देवताओं का स्मरण वा जाप करने को धर्म समझता है। स्मरण करके उसको अपनी प्रकृत रोगी अवस्था का कोई पता नहीं चलता। मनुष्य को किसी मत को, गुरु को, देवी-देवताओं को पूजकर अपने भयानक रुहानी रोगों का ध्यान तक नहीं आता। उनका फिकर तो क्या पैदा होना था। प्रत्येक मनुष्य रोगी है और रुह का नाश कर रहा है। कई आत्मिक रोगों के उदाहरण दिए गए। देवात्मा, मनुष्य के रूहानी रोगों को उज्ज्वल करते हैं, उनमें फिकर पैदा करते हैं और रोगी रूहों को बचाते हैं। सभापति जी ने काफी व्याकुल होकर इस सत्य को पेश किया।

12 मार्च सुबह 8.30 बजे : एक और सभा की गई। इसमें बताया गया कि मनुष्य को अपने आत्मिक रोग देव प्रभावों वा देव ज्योति के भीतर ही दिखाई दे सकते हैं। आत्मा के भावों का ज्ञान देव ज्योति में ही दिखाई देता है। सभा के अन्त में श्रीमान आसा सिंह जी के सम्बन्ध में शुभ कामना का साधन किया गया।

शाम 8.30 बजे एक सभा की गई। इस सभा में स्थानिय जनों के भिन्न एक नौजवान गंगानगर से आकर सभा में शामिल हुआ। सभा में बताया गया कि मनुष्य की आत्मिक बनावट अधूरी है। मनुष्य अपने आप अपनी प्रकृत अवस्था को नहीं देख सकती, अपनी नीचता को नहीं देख सकता और न ही अपनी नीचता से मुक्त हो सकता है। देवात्मा की देव ज्योति वा देव तेज मनुष्य के पूरक हैं, क्योंकि इनके बिना न वह अपनी नीचता से मुक्त हो सकता है और न ही उच्च बन सकता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य देवात्मा के देव प्रभावों का मोहताज है। मनुष्य न ज्योति स्वरूप है, न ब्रह्म स्वरूप है, वह पाप और झूठ स्वरूप है। हानिकारक जीव है।

13 मार्च सुबह की सभा 8.30 बजे की गई। इसमें 20 के करीब जन शामिल थे। इसमें बताया गया कि धर्म पाने की इच्छा वा तमन्ना होनी चाहिए। इसमें बताया गया कि धर्म की क्यों अवश्यकता है? इसके बिना मनुष्य नाश और दुख से नहीं बच सकता। बताया गया कि धर्म उच्च भावों की प्राप्ति से आता है। श्रद्धा भाव की अवश्यकता, उसके गुणों को भली भांत समझाया गया।

13 मार्च रात की सभा में भी अच्छी हाजरी थी। ज्ञानी जी ने पहले "जीवन ज्योति के तुम सूरज, अन्धेरा दूर करते हो।" नामक भजन का गान किया। फिर श्रीमान जी ने अन्धेरे की हानियां बताई। आत्मिक अन्धेरे के विषय में बताया। अपने आत्मा की बनावट का पता न होना, अपने परिचालक भावों का ज्ञान न होना, इसकी बहुत भयानक हानियां है। गुरू महाराज अपनी ज्योति देकर हमारा यह अन्धकार दूर करते हैं। हमें उनके साथ जुड़कर अपना सच्चा भला करने की आवश्यकता है।

14 मार्च सुबह की सभा 8.30 बजे की गई। इसमें हाज़री काफी बढ़ गई थी। सभा में बताया गया कि धर्म उच्च भावों का नाम है। श्रद्धा भाव धर्म

भावों की दहलीज़ है। मिथ्या श्रद्धा के विषय में बताया गया गुणों को देख सकना, उनके आगे झुक सकना, अपने आपको तुच्छ देखना, गुणवान को महान देखना और झुकना श्रद्धा है। बिना गुण देखे सन्मान बन्दर सलाम होती है। जिस प्रकार दण्ड आदि पेलने से बाजू और छाती में ताकत आती है, उसी प्रकार गुण देख देखकर लिखने का साधन करने से श्रद्धा बढ़ती है। जो श्रद्धा का सच्चा भाव पैदा कर सकता है, वही धर्म की दहलीज पर पैर रख सकता है।

रात की सभा में 25 के करीब जन थे। पहले एक सत्संगी ने "नीच रागों की मद में पागल" नामक भजन गाया। फिर श्रीमान जी ने बताया कि दुनियां के धर्मो का ज़ोर नाम जपने स्मरण करने, पाठ करने, नमाज़ पढ़ने आदि पर है। उनके भीतर जो नीच भाव काम कर रहे हैं, जो तबाही ला रहे हैं, उस तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता। गुरु महाराज नीच रागों को दिखाते हैं और अधिकारी जनों को उससे मुक्ति देते हैं।

15 मार्च की सुबह की सभा में पहले "करो कृपा मेरे सत्गुरू, बचालो नीच जीवन से" नामक भजन का गान किया गया। फिर बताया गया कि किस प्रकार नीच जीवन मनुष्य को बर्बाद करता है। उच्च जीवन मनुष्य की रक्षा करता है। हम सब ही नीच जीवन रखते हैं। वह हमें दिखाई नहीं देता, इसलिए हम सन्तुष्ट हैं। उच्च जीवन उच्च भावों से आता है, उच्च भावों को पैदा करने का यदि संग्राम नहीं करते, तो हम उच्च नहीं बन सकते। दाता जी का दृष्टांत पेश किया गया। कृतज्ञता उच्च भाव है। इसके बिना मनुष्य कमीना और पापी और खुदगर्ज बनता है। पूजनीय भगवान उपकारियों के उपकार दिखाते हैं, कृतघन्ता को दिखाते हैं। उपकारियों का अपने ऊपर ऋण दिखाते हैं और उसे उतारने का बल प्रदान करते हैं। उन्होंने पापी, कमीने और कृतघन जनों को बदला है। उनके साथ हमारे जीवन का हित जुड़ा है। इसलिए उनके साथ जुड़ने की अवश्यकता है।

15 मार्च रात की सभा इसमें बताया गया कि हमारे देश में वेदान्त का बहुत प्रभाव रहा है। उसने सम्बन्धों से वैराग्य सिखा दिया। देवात्मा ने सम्बन्धों को तोड़ने नहीं बल्कि हितकर बनाने की शिक्षा दी है। माता पिता का सम्बन्ध, बहन भाईयों का सम्बन्ध, पति पत्नी का सम्बन्ध नरकीय नहीं स्वर्गीय होना चाहिए। हम स्वार्थ से जुड़ते हैं और पूरा न होने पर फट जाते हैं। सम्बन्धों में, सम्मान, श्रद्धा और हमदर्दी की भावनाओं से जुड़कर सम्बन्ध मीठे वा स्वर्गीय बनते हैं। देवात्मा ने जो उच्च सम्बन्ध बनाए, उसका ब्यान करके, गुरू महाराज के मनुष्यों के परस्पर सम्बन्धों में किए कारज पर रोशनी डाली गई। यह सभा सबके लिए काफी हितकर सिद्ध हुई।

16 मार्च सुबह : यहां के दौरे की आखरी सभा थी। काफी अच्छी हाजरी थी। सभा में कई नई जनों ने प्रश्न किए जिनका बारी-बारी से उत्तर दिया गया। हाजरीन ने इससे लाभ उठाया। कुछ जनों को हितस्त्रोत आदि के पर्चे दिए गए। सभा कराने के लिए जल्दी-जल्दी आने के लिए कई जनों ने अपील की। एक हजार रु० दान और कुछ चन्दा अखबार वसूल हुए। इस प्रकार यह दौरा कुछ सफल रहा।

12.30 बजे के बाद श्रीमान जी, डाक्टर साहिब वा अनिल जी के साथ गंगा नगर रवाना हो गए। हनुमान गढ़ जंकशन तक डाक्टर जी तो साथ

रहे और सब तरह से सहायक रहे। शाम को श्रीमान जागीर सिंह जी और श्रीमान सुखदेव सिंह जी के साथ कार में ऐलनाबाद से केसूपुरा पहुंच गए। यहां पर सुबह 8:00 बजे सभा रखी गई। इसमें 60 के करीब जनों की हाजरी थी। सभा में बताया गया कि नेचर में असरों का खेल है। अधिकतर नीच असरों का ही जोर है। इन असरों में मानव जीवन बर्बाद हो रहे हैं। उच्च असरों वा देव असरों के विषय में बताया गया। देवात्मा के असर मनुष्य को नीचता से बचाकर उसका विकास करते हैं। उदाहरणों द्वारा यह बात समझाई गई।

17 मार्च सुबह की सभा में भी 30 - 40 जन शामिल थे। इसमें बताया गया कि पशुओं के आँखें तो होती हैं पर उन्हें स्कूल, कॉलेज, टी. वी., फ्रिज, हस्पताल, फोन आदि किसी चीज़ की समझ नहीं होती। वह आँखें रखकर भी अन्धे होते हैं। उसी प्रकार मनुष्य भी आँखें रखकर, पढ़ लिखकर, पद प्रभुत्व रखकर कई पक्षों में अन्धे हैं। अन्धा होना और दुखी होना एक ही बात है। मनुष्य दूसरे अस्तित्वों, पौधों, पशुओं, धातुओं और मनुष्यों के आमतौर पर गुण नही देख सकता। इस पक्ष में वह अन्धा ही रहता है। अन्मेल, टकराहट वा बर्बादी का जीवन व्यतीत करता है। उसे कुछ पता नहीं लगता। गुरू महाराज इस अन्धकार को दूर करके आँखे देते हैं और बरकतों के भागी बनाते हैं। उदाहरण द्वारा यह समझाया गया।

रात की सभा में हाजरी और भी अच्छी हो गई थी, सभा में बताया गया कि मनुष्य शारीरिक रोगों को तो देख सकता है, परन्तु आत्मिक रूप से वह कितना रोगी है, यह उसे दिखाई नहीं देता और न ही इन रोगों के विषय में उसे कोई बताने वाला है। गुरु महाराज मनुष्य के भयानक आत्मिक रोगों को रोशन करते हैं। इस प्रकार की घटनाओं से विषय को स्पष्ट किया गया।

18 मार्च सुबह की सभा में हजारी 45 से 50 थी। इसमें बताया गया कि एक और पक्ष है, जिसमें मनुष्य अन्धा है, वह यह कि उसे यह नज़र नहीं आता कि उसके लिए भी किसी ने कुछ किया है और वह अपने उपकारियों को क्या महत्त्व देता है। उपकारियों के उपकार दिखाने का यत्न किया। इस विषय में देवात्मा नई आँखें देते हैं, उसके उदाहरण पेश किए गए। यह घटनाएँ हाजरीन को देवात्मा के आगे झुका रही थी।

रात की सभा में 100 से भी अधिक जनों की हाजरी थी। इसमें बताया गया कि मुर्दा संगत वह होती है, जिसमें किसी जन का भी कोई भला न हो। किसी की बुराई न जाए। गुरु महाराज की पैदा की हुई संगत जिन्दा संगत है। उसमें उनकी ज्योति शक्ति काम करती है। मनुष्य के नीच जीवन में परिवर्तन करती है। बहुत से नये वा पुराने परिवर्तन को गहराई से महसूस करके बताया गया। देवात्मा की महानता के आगे हृदय झुकने के लिए बेबस हो रहे थे।

19 मार्च सुबह की सभा यहां आखरी सभा थी। उसमें श्रीमान जी ने बताया कि मनुष्य को देवधर्म की विज्ञान मूलक शिक्षा बेशक समझ न आए, परन्तु यदि वह दो बातें अपना सके और उन पर पक्का रहे तो उसका बहुत भला हो सकता है। एक तो वह मोटे मोटे पापों वा बुराईयों से पूरा - पूरा बचा रहे और मिथ्या विश्वासों और कहलाने वाले कल्पित देवी देवताओं की झूठी पूजा से बचा रहे, दूसरा वह इस बात पर अमल करे कि तुम्हारी जरूरत मेरे से ज्यादा है" वह दूसरे की जरूरत को पहल दे और अपनी

जरूरत को पीछे रखें। सर फिल्म सिल्प सिडनी और अन्य परोपकारियों की घटनाएं सुनाई गई। सभा में सबको बेर बांटे गए। 160 रु० दान प्राप्त हुआ। श्रीमान सुखदेव सिंह जी ने खुशी-खुशी 1000 रु० दान दिया।

प्रेम कुमार जी और उनकी पत्नी 2 सभाओं में बनी से आकर शामिल हुए। बहुत सारे नये नौजवान इस दफा संगत से जुड़ रहे हैं। इस प्रकार यहां यह संग्राम कुछ अंश सफल रहा।

उसके बाद श्रीमान जगीर सिंह जी को लेकर श्रीमान जी भटिंडा पहुंचे, यह श्रीमान कुलदीप सिंह जी और गोनियाना से सुखदेव सिंह जी, ज्ञान चन्द जी, मिल गए और सब धर्म सम्बन्धी मिलकर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के पास कल्याण पहुंचे क्योंकि उनके माननीय माता जी का दु:ख-प्रद देहान्त 15 मार्च को हो गया था।

कल्याण मलका : 19 तारीख को यहां श्रीमान जी ने एक सभा करवाई। उन्होंने बताया कि इन्सान पशुओं से विकसित हुआ है, परन्तु अभी भी वह बहुत कुछ पशुपन में ही लिप्त हैं। अधिकतर हम मनुष्य अपना पेट भरने लिए ही जीते हैं। यही उसका लक्ष्य हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। कोई और प्रोग्राम नहीं। इन्सान दुनियावी समानों और सम्बन्धियों से जुड़ जाता है। परन्तु पशु इससे मुक्त हैं। मनुष्य अनेक बन्धनों का कैदी है।

एक औरत जेवर गुम हो जाने पर एक महीना तड़प-तड़प कर मर गई, जो जेवर उसे रास्ते में पड़े मिले थे। ऐसे मनुष्य Earth bound हो जाते हैं। पदार्थ इस्तेमाल के लिए होते हैं, उनका अनुचित बन्धन मनुष्य को कोढ़ी बना देता है।

आखिर में श्रीमान बलबहादुर जी की माता जी के सम्बन्ध में शुभ कामना की सभा की गई।

20 मार्च 2008 सवेरे 8:30 बजे यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। जिसमें स्थानीय साथी सेवक शामिल हुए। सभा में बताया गया कि यदि मनुष्य को मौत याद हो तो उसकी गति कुछ और हो। महात्मा बुद्ध के जीवन की गति अलग थी। वह मौत की सच्चाई को जानकर जीवन भर के लिए चिन्ताशील बन गए। उनके लिए राज पाठ तुच्छ हो गए। पत्नी और बच्चा छोड़कर जाना सहज हो गया। (बेशक सम्बन्धों का त्याग अनुचित था) परन्तु दूसरों के दुखों को दूर करना उनका लक्ष्य बन गया। देवात्मा सत्गुरु के प्रभावों से ऐसे महान कर्मचारी हुए हैं, जिन्होंने जीवन और मृत्यु की सच्चाईयों को जाना है।

अन्त में फिर माता जी के सम्बन्ध में शुभ कामना की गई। **(एक सेवक)**

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts